2.3 इतिहास शिक्षण के लक्ष्य (Aims of Teaching History)

इतिहास के अध्यापक को इतिहास शिक्षण के लक्ष्य की स्पष्टता अत्यन्त आवश्यक है। यदि अध्यापक उद्देश्यों के प्रति सजग है तो उसका शिक्षण सुनियोजित, व्यवस्थित एवं सार्थक होगा। इतिहास शिक्षण को सप्रयोजन बनाने के लिये इतिहास शिक्षण के लक्ष्यों का अध्ययन आवश्यक है।

2.3.1 इतिहास के प्रति रूचि उत्पन्न करना (To create interest for History) - विभिन्न विद्वानों ने इतिहास शिक्षण का लक्ष्य छात्रों में इतिहास के लिये रूचि उत्पन्न करना

माना है। इस कारण इतिहास के शिक्षक का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वह छात्रों में इतिहास के प्रति रूचि जागृत करें।

2.3.2 वर्तमान को स्पष्ट करना (To Explain the present) - इतिहास के अभाव में सामाजिक वातावरण का कोई अर्थ नहीं हैं। अत: बालक को समाज में व्यवस्थित होने के लिये अपने सामाजिक वातावरण या अपनी प्रचलित परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है। अत: अतीत के द्वारा इस सामाजिक वातावरण को अर्थपूर्ण बनाया जाता है। इसी कारण इतिहास शिक्षण का लक्ष्य वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया है।

2.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Sceintific Attitude) - विद्वानों का मत है कि इतिहास शिक्षण का एक लक्ष्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना होना चाहिये। अत: इसके लिये इतिहास का अध्यापन इस प्रकार किया जाये जिससे वे अवैज्ञानिक वस्तुओं को त्यागने में समर्थ हो सकें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिये उनकी निरीक्षण शक्ति, तर्कशक्ति तथा सत्य निर्णय करने की शक्तियों का विकास करना आवश्यक है।

2.3.4 लोकतांत्रिक समस्याओं के समाधान का लक्ष्य (Aims of Solution of Democratic problems)-लोकतंत्र एक जीवनशैली है। इस जीवनशैली की यथार्थता को स्वीकार करना इतना सरल नहीं है जितना सैद्धान्तिक रूप से लगता हैं। लोकतंत्र का सबल पक्ष क्रियात्मक पक्ष है। अत: लोकतांत्रिक मूल्यों को स्वीकार करना स्वयं में एक बहुत बडी तपस्या हैं लोकतंत्र हमें स्वतंत्रता प्रदान करता है और इसी स्वतंत्रता को व्यक्ति स्वच्छन्द समझ बैठता है तथा यही से लोकतांत्रिक समस्याओं का प्रारम्भ होता हैं। इतिहास शिक्षण हमें इन समस्याओं के प्रति जागरूक करता है और यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि व्यक्तित्व का विकास केवल लोकतांत्रिक जीवनशैली में ही संभव है, तानाशाही अथवा राजतंत्र में नहीं।

2.3.5 राष्ट्रीयता की भावना का विकास (To Develop the feeling of Nationality) - इतिहास शिक्षण द्वारा राष्ट्र प्रेम उत्पन्न किया जाना आवश्यक है। हमारी जाति, धर्म, वर्ग अनेक हो सकते है परन्तु हमारा राष्ट्र एक है जो सर्वोपरि है। विद्यार्थियों को यह

2.3.6 अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना का विकास (To Develop the feeling of Internationalism)-इतिहास शिक्षण वसुधैव कुटुम्बकम की भावनाओं को विकसित करता है। इतिहास विद्यार्थियों के मस्तिष्क में वह मानचित्र बनाता है जिसके माध्यम से राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता का आभास होता है। इतिहास यह स्पष्ट करता है कि विश्व की विभिन्न सांस्कृतियों ने पारस्परिक रूप से किस प्रकार प्रभावित किया और मानवता के विकास की कहानी

को क्या स्वरूप प्रदान किया? मानव जाति के इन्हीं संबंधों द्वारा विद्यार्थियों में अन्तर्राष्ट्रीय सदभाव की भावना का विकास करना इतिहास शिक्षण का लक्ष्य है।

2.3.7 विभिन्न स्तरों पर इतिहास के उद्देश्य (Objectives of History Teaching at Different Stages) - संपूर्ण भारत में प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर तथा माध्यग्मिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर इतिहास का शिक्षण किया जाता है। उच्च प्राथमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य है-

1. उच्च प्राथमिक स्तर (Upper Primary Stage)- उच्च प्राथमिक स्तर में कक्षा छठी से आठवीं तक को सम्मिलित करते हैं। उनके शैक्षिक स्तर में मनो-शारीरिक स्तर को ध्यान में रखते हुए इनके लिए इतिहास शिक्षण के नीचे लिखे उद्देश्य निर्धारित किये जा सकते हैं-

अ. इतिहास शिक्षण में रूचि उत्पन्न करना, यह तभी संभव है, जब वे इतिहास से प्रेम करने लगेगे। अतः इस स्तर पर इतिहास के प्रति छात्रों में रूचि तथा प्रेम जागृत करना चाहिये-

ब. छात्रों में आलोचनात्मक योग्यता का विकास करना, इसमें वे ऐतिहासिक तथ्यों की समीक्षा करना सीख जायेंगे। इस योग्यता के आधार पर अपने अतीत को निष्पक्ष भाव से समझने की योग्यता उनमें जागृत होगी।

स. मानसिक शक्तियों का विकास करना, जिससे कि बालक में तर्क शक्ति, विवेचन शक्ति, विश्लेषण शक्ति एवं चिन्तन शक्ति आदि का इतिहास शिक्षण के द्वारा सरलता से विकास किया जा सकता हैं।

द. समय-ज्ञान का विकास करना, इस स्तर पर समय ज्ञान के विकास के लिये स्थूल साधनों के साथ ही अमूर्त साधनों आदि का इतिहास शिक्षण के द्वारा सरलता से विकास किया जा सकता है।

य. देश-प्रेम तथा विश्व-बंधुत्व की भावना का विकास करना, इतिहास शिक्षण के द्वारा बालकों में राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जा सकता है तथा साथ ही साथ विश्व-बंधुत्व तथा मानवतावादी दृष्टिकोण का विकास भी किया जाना चाहिये।

र. वर्तमान एवं भविष्य के निर्माण की योग्यता का विकास करना, इतिहास शिक्षण की सहायता से छात्रों को इस योग्य बनाने के प्रयास करने चाहिये कि वे अतीत के आधार पर अपने वर्तमान तथा भविष्य का निर्माण कर सकें।

2. माध्यमिक स्तर (Secondary Stage) - माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के निम्नांकित उद्देश्य होने चाहिये-

अ. अतीत से संबंधित घटनाओं, तथ्यों, विचारों, समस्याओं, व्यक्तियों आदि का ज्ञान करना।

ब. छात्रों को इतिहास से संबंधित तथ्यों, घटनाओं आदि का इस प्रकार बोध करना कि वे इनमें अन्तर 'कर सके,' तुलना कर सके या कारण परिणाम में संबंध स्थापित कर सकें।

स. इतिहास विषय में वास्तविक रूचि जागृत करना जिससे वह इतिहास से संबंधित साहित्य तथा साधनों में इतिहास जानने के लिए और अधिक रूचि लें।

द. छात्रों में समय-रेखा, घटना-रेखा, चार्ट, प्रतिरूप आदि बनाने की योग्यता का विकास करना।

य. छात्रों के दृष्टिकोण में उदारता एवं व्यापकता का विकास करना।

र. अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने तथा वर्तमान की समस्यायें सुलझाने की योग्यता का विकास करना।

ल. सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों के संबंध में स्वस्थ्य दृष्टिकोण का विकास करना।

द. अतीत के आधार पर वर्तमान तथा भविष्य का बोध कर सकने की योग्यता का विकास करना।

श. विश्व की विविध सभ्यताओं व संस्कृति की विशेषताओं का उनके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन कराना।

ह. राष्ट्र की सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा आर्थिक समस्याओं से अवगत कराना।

2.4 इतिहास शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching History)

लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु जिन विभिन्न चरणों को दृष्टिगत किया जाता है। उसे उद्देश्य कहते हैं। गुड के अनुसार उद्देश्य वह स्तर अथवा साध्य है जो छात्र द्वारा विद्यालय की क्रिया पूर्ण करने के पश्चात् किया जाता है।

"Objective is standard or goal to be achieve by the people when the work in the school activity is completed."-C.V.Good

"गुड के मतानुसार उद्देश्य छात्र में वह व्यावहारिक परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा निर्देशित अनुभव से प्राप्त होता है।

"Objective is a desired change in the behavior of a people as a result of experience directed by the school"-C.V.Good

आधुनिक शिक्षाशास्त्र में विषयों के शिक्षण के उद्देश्यो को व्यवहार परिणामों (Behavioural outcomes) के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। यह इस मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त पर आधारित है कि सीखने का अर्थ है व्यवहार में परिवर्तन होना। यदि कोई चीज सीखी गयी है तो हमें उसका प्रमाण उसके द्वारा लाये विद्यार्थी या सीखने वाले के व्यवहार में दिखलाई देने चाहिये। इसलिए आजकल सभी विषयों के शिक्षण उद्देश्यों को 6 भागों में व्यवहार परिवर्तनों के लक्षणों के रूप में रखा जाता है -

1. ज्ञान (Knowledge)
2. अवबोध (Understanding)
3. प्रयोग (Application)
4. कौशल (Skill)
5. रूचि (Interest)

1. ज्ञान (Knowledge)
2. अवबोध (Understanding)
3. प्रयोग (Application)
4. कौशल (Skill)
5. रुचि (Interest)

6. अभिवृत्ति (Attitude)

व्यावहारात्मक रूप में इतिहास शिक्षण के निर्देशात्मक उद्देश्य (Instructional objectives of History Teaching in behavioral terms) -शिक्षण या निर्देशात्मक उद्देश्यों का संबंध विद्यार्थी के ज्ञान, कुशलताओं, योग्यताओं, रुचियों तथा अभिवृत्तियों में परिवर्तन करने से होता है। इस उद्देश्यों का स्पष्टीकरण विद्यार्थी के व्यवहार संदर्भ में किया जाता है। इतिहास शिक्षण में निर्देशात्मक उद्देश्य क्या है और इनमें कि प्रकार व्यवहार-परिवर्तन आते है, इसके बारे में नीचे विवरण दिया जा रहा है -

1. **ज्ञानात्मक उद्देश्य (Knowledge)** - इसके अन्तर्गत तथ्यों, घटनाओं एवं सिद्धान्तों को समाहित किया जाता है। ज्ञानात्मक उद्देश्य के तीन विशिष्टिकरण होते हैं -

अ. प्रत्यास्मरण (Recall)
ब. पुन: पहचान (Recognization)
स. पुनर्कथन (Retelling)

2. **अवबोधात्मक उद्देश्य (Understanding)** - इसके अन्तर्गत घटनाओं, तथ्यों एवं सिद्धान्तों आदि का अवबोधन किया जाता है इसके विशिष्टिकरण निम्नांकित है -

अ भेद करना
ब. वर्गीकरण करना
स तुलना करना
द. कारण व परिणाम में संबंध स्थापित करना
य. अन्तर करना
र. कारण बताना
ल. उदाहरण देना
व. व्याख्या/स्पष्टीकरण करना
श अशुद्धि पहचानना
स अशुद्धि दूर करना

3. **प्रयोगात्मक उद्देश्य (Application)** - इसके अन्तर्गत तथ्यों, घटनाओं, सिद्धान्तों आदि का प्रयोग किया जाता है। इसके विशिष्टिकरण निम्नांकित है -

अ. विश्लेषण करना
ब. अनुमान लगाना
स. सामान्यीकरण के आधार पर नियम बनाना
द. निष्कर्ष निकालना
य. परीक्षण करना

4. **कौशलात्मक उद्देश्य (Skill)** - मानचित्रों, चार्टों, समय-रेखा आदि को बनाने का कौशल विकसित करना, आंगिक गति का संचालन आदि।

5. **अभिरुच्यातमक उद्देश्य (Interest)** - छात्रों में ऐतिहासिक घटनाओं एवं व्यक्तित्व के विषय में अभिरुचि विकसित करना। इसके अतिरिक्त प्राचीन एवं मध्यकालीन स्त्रोतों के खोज करने की रुचि विकसित करना एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करना।

6. **अभिवृतियात्मक उद्देश्य (Attitude)** - छात्रों में संस्कृतियों के प्रति, अतीत के अनुभवों के प्रति, ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के प्रति अभिवृत्ति विकसित करना, व्यक्ति, वस्तु और स्थान के प्रति सकारात्मक इष्टिकोण विकसित करना।